PHILOSOPHY

Hons., Paper ~~VII~~ (Part III)

Marxism (मार्क्सवाद)

Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951.

→ मार्क्सवाद समाजवाद का वह रूप है जिसे कार्ल मार्क्स (1818-1883) ने प्रस्तुत किया था। समाजवाद के इस मार्क्सवादी रूप को ~~वैज्ञानिक~~ वैज्ञानिक समाजवाद (Scientific Socialism) भी कहा जाता है क्योंकि इनके द्वारा प्रतिपादित समाजवाद एक काल्पनिक विचारधारा न होकर विधिवत् रूप से प्रतिपादित एक व्यावहारिक दर्शन है।

→ कार्ल मार्क्स के विचारधारा के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं –

1. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectic ~~Method~~ Meterialism):– इस सिद्धान्त के आधार पर मार्क्सवाद इस जगत (प्रकृति व समाज) के भीतर होनेवाले परिवर्तनों की व्याख्या करता है। मार्क्स ने इस द्वन्द्वात्मक प्रणाली को हीगेल से ग्रहण किया है।

द्वन्द्वात्मक नियम के अनुसार विकास की प्रक्रिया के तीन अंग हैं – वाद (Thesis), प्रतिवाद (Anti-thesis) और संवाद (Synthesis) यह विकास लगातार उन्नत अवस्था की ओर होता है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के तीन प्रमुख नियम हैं। पहला नियम एकता का नियम है जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु में दो विपरीत चीजों में हमेशा एकता होती है और ये विरोधी चीजें सदा एक-दूसरे से संघर्ष में लगी रहती है। दूसरा नियम गुणात्मक परिवर्तन का है जिसके अनुसार किसी वस्तु की मात्रा में लगातार परिवर्तन आने से एक समय के बाद वस्तु का स्वरूप ~~अचानक~~ अचानक परिवर्तित हो जाता है। यह गुणात्मक परिवर्तन, मार्क्स के अनुसार, सामाजिक क्रांति का सूचक है। ~~तीसरे नियम के अनुसार~~ तीसरा नियम निषेध का निषेध कहा जाता है जिसके अनुसार भौतिक जगत में पुरानी चीजों की समाप्ति और नई चीजों का आगमन होता है।

प्राकृतिक जगत का विकास इसी प्रक्रिया से हुआ है। इसी समाज में भी आदिम समुदाय को दास-समाज ने बदल दिया। बाद में दास समाज को सामंतवाद ने बदल दिया और ~~उसे~~ बाद में पूंजीवाद भी आनेवाले साम्यवाद द्वारा बदल दिया जायेगा।

यहाँ सामंतवाद दास व्यवस्था का निषेध है और पूंजीवाद सामंतवाद का निषेध है। दार्शनिक संदर्भ में जिस प्रकार प्रतिवाद वाद का निषेध है, उसी प्रकार संवाद प्रतिवाद का निषेध है। यह परिवर्तन विकासात्मक है।

Scanned with CamScanner

2. वर्गसंघर्ष – मार्क्स के अनुसार अब तक का इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है। इसमें दास व्यवस्था के अन्तर्गत दास और स्वामी के बीच, सामंती व्यवस्था के भीतर भूमिहीनों और सामंतों के बीच, ~~तथा~~ पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर श्रमिक और पूंजिपति के बीच ~~संघ~~ संघर्ष है।

पूँजीवादी समाज में दो प्रमुख वर्ग हैं - पूंजीपति जिसका पूंजी के साधनों पर नियंत्रण है और श्रमिक जिसके पास ~~केवल~~ श्रम है, जिसे बेचकर वह अपनी जीविका चला सकता है।

मार्क्स ~~के अनुसार~~ का कहना है कि पूंजीवाद के दौरान श्रमिकों का शोषण चरम पर होता है। इस समय फैक्ट्री सिस्टम पर आधारित होने के कारण श्रमिकों में एकता की चेतना आ जाती है और ये श्रमिक अपने आपको एक सचेत वर्ग के रूप में तैयार कर लेते हैं जो पूंजिपतियों से संघर्ष करे। मार्क्स कहता है कि इस संघर्ष में पूंजिपतियों की हार निश्चित है और सर्वहारा वर्ग के अधिनायक तंत्र की स्थापना तय है।

③ क्रांति – समाज में गुणात्मक परिवर्तन (अर्थात समाज के सभी पक्षों में परिवर्तन) क्रांति कहलाता है और क्रांति के उपरांत पहलेवाली व्यवस्था समाप्त हो जाती है तथा नयी व्यवस्था आ जाती है। यह परिवर्तन हिंसात्मक तरीके से होता है। क्रांति ~~सामाजिक~~ सामाजिक परिवर्तन का अनिवार्य माध्यम है।

साम्यवादी क्रांति में पूंजीपतियों के विरुद्ध सारे मजदूर संघर्ष करते हैं। इस क्रांति के बाद पूंजीवाद की समाप्ति एवं साम्यवाद की स्थापना निश्चित है। मार्क्स के अनुसार यह साम्यवादी क्रांति ही वास्तविक क्रांति है। क्रांति के फलस्वरूप राजनीतिक - आर्थिक शक्ति सर्वहारा के ~~प्र~~ हाथों में आ जाती है और बुर्जुआ लोकतंत्र के स्थान पर सर्वहारा की तानाशाही स्थापित हो जाती है। इस व्यवस्था के दौरान सर्वहारावर्ग उत्पादन के साधनों पर राज्य का नियंत्रण स्थापित करके सभी नागरिकों को समाज में समान भागीदार बना देता है।

Scanned with CamScanner